

भजनावली ॥

श्रीविष्णुप्रसाद वकीलके पुत्र जिला गयाजी
स्थानटिकारीनिवासी हालवासी स्थान हजारी-
बाग महल्ले बड़ाबाजार जिला हजारीबाग
विद्वज्जनतमोपह परमभक्त मुंशी जगन्नाथ-
सहाय जमींदार विरचित

जिसमें

शिवविवाह, आरती, प्रभाती, भजन, होली, चैत, गीतगोविन्द,
बारहमासा, ठुमरी आदि अतिउत्तम सरस छन्दों और
रागों में भक्तजनों के आनन्द के निमित्त वर्णित हैं ॥

ग्रन्थकर्ता से शोधितहोकर

सातवीं बार

लखनऊ

सुपरिटेण्डेंट बाबू मनोहरलाल भार्गव बी. ए., के प्रबन्ध से
मुंशी नवलकिशोर सी. आई. ई., के छापेखाने में छपी

सन् १९२२ ई० ॥

इक तसनीफ महफूज है वहक नवलकिशोर प्रेस ॥

भजनावली का सूचीपत्र ॥

नाम	संख्या	पृष्ठ
दोहा ग्रन्थारम्भ के	८	१
वन्दना दशावतारकी	१	२
शिवजीका विवाह	१	३
आरती	१०	८
प्रातकाली	४	१५
भजन गुरुनानक	१	१८
भजन ठाकुरद्वारा	१	१९
भजन शिवजीके	३	२०
भजन दशावतारका	१	२३
रामावतार के भजन	६	२५
हनुमान्जी के भजन	२	२६
कृष्णावतार के भजनलीला के	से	ग्राम ।

नाम	संख्या	पृष्ठ
विनय आदि	७	४४
होली	१०	४६
चैत	३	५७
बारहमासा	४	५६
तिखाना	१	६६
कजरी	१	६६
गीतगोविन्द	२	६७
ठुमरी खेमटा टप्पा दोहा	१३	७०
मुंशी नवलकिशोर साहिवकी प्रशंसा		
और संवत् समाप्त ग्रन्थ	२	७६
<u>जमा</u>		६०



अथ भजनावली ॥

दोहा ॥

बन्दि के चरण गणेश के अरु सब देव
मनाय । गावे अनुपम हरिभजन जगन्नाथ
मन लाय ॥ १ ॥ जगन्नाथ बहु पदन में
होत गान में भङ्ग । ताते जन जगन्नाथ
अस बहुपद लिख्यो अभङ्ग ॥ २ ॥ हौं
सुत विष्णुप्रसाद को अहे टिकारी धाम ।
रहौं हजारीबाग में जन्मभूमि यह ठाम ॥ ३ ॥

॥ सूरदासवचन ॥

बृन्दावन से बन नहीं नन्दग्राम से ग्राम ।

२ भजनावली ।
बंशीबट से बट नहीं कृष्ण नाम से नाम ॥४॥

॥ तुलसीदासवचन ॥

कलियुग सम नहिं आन युग जो नर कर
विश्वास । गाइ राम गुणगण विमल भव
तर विनहिं प्रयास ॥ ५ ॥ श्रवण घटहु
पुनि दृगघटहु घटो सकल बलदेह । इते
घटे घटिहै कहा जो न घटे हरिनेह ॥ ६ ॥

॥ जगन्नाथकृत ॥

अस उर में विश्वास करि सुमिरि चरण
भगवान । गावहिं जो नर हरिभजन होत
सदा कल्याण ॥ ७ ॥ भजनारम्भ अब होत
है सुनिये कुँवर कन्हाइ । राधादिक गो-
पिन सहित आसन लेहु सुहाइ ॥ ८ ॥

अथ बन्दना दशावतारकी ॥
चौ० ॥ बन्दों प्रथम मीन अवतारा ।

भजनावली ।

३

पुनि कच्छप जिन मन्दरधारा ॥ बन्दों पुनि
बाराह स्वरूपा । अरु नरसिंह जगत सुर
भूपा ॥ प्रणवों वामनवेष मुरारी । परशुराम
सन्तन हितकारी ॥ प्रणवों रामचन्द्र अव-
तारा । लङ्का में जिन रावण मारा ॥ प्रणवों
कृष्णचन्द्र गिरिधारी । बौधरूप भक्तन
हितकारी ॥

दो० ॥ अब अकलंकी रूपको जो हो-
इहि कलि अन्त । जगन्नाथ बन्दन करत
करहु कृपा भगवन्त ॥

अथ शिवजी का विवाह वर्णन ॥

दो० ॥ बन्दों श्रीगिरिजारमण कृपा
सिन्धु गुणखान । करहु कृपा जेहि करउँ
तुम व्याह चरित्र बखान ॥

चौ० ॥ श्रीगौरी हिमगिरिकी कन्या ।

४ भजनावली ।

मयना तासु मातु सो धन्या ॥ उमाकीन्ह
तप शिवपतिपावन । लेइ परीक्षा हर हर्षे
मन ॥ पठये सप्तऋषिन्ह गिरिके घर । अरु
ऋषि संगिनि रुन्धति कहिकर ॥ मोते क-
रहु उमाकर व्याहा । जाइकहा सब शिवहिं
सराहा ॥ कह गिरि करब विवाह ऋषीशा ।
कहाआय सब जहां सतीशा ॥ होन लगा
दुहुँदिशि व्यवहारा । चली महेश बरात
अपारा ॥ विबुध बृन्द सब चले बराता ।
ब्रह्मा विष्णु सकल सुखदाता ॥ ऋषि
गन्धर्व अप्सराराजें । बहुविधि तहां बाज-
नेबाजें ॥ भूत पिशाच असुरगण जेते ।
शिवसँग चले बरातहिं तेते ॥ चले बसह
चढि शम्भुदयाला । तनु विभूति गल
ब्यालकराला ॥ शीश गंग त्रयनयन

भजनावली ।

५

विराजें । कर त्रिशूल अति डमरू बाजें ॥

जटामुकुट कटिमें मृगछाला । शशिललाट

मुण्डनकी माला ॥

दो० ॥ मयना देखत रूप अस अवनि

गिरी पछितात । है सचेत कह हैं कहां रुं-

धति अरु ऋषिसात ॥

चौ० ॥ मृषा कथन फल उनहिं चखा-

ऊं । अब कैसे मैं धीरज पाऊं ॥ कहत

हिमाचल तासन या विधि । प्रिया सोच

जनि यही लिखा विधि ॥ गौरी जाइ कहा

तब मातहिं । मानहु मातु पिता की बातहिं ॥

सुनि अस माता उर रिसिछाई । मारेउ

गौरिहिं उठि तेहिठौं ॥ ब्रह्मा विष्णु गये

तिहिपाहीं । कहन लगे समुझाइके ताहीं ॥

सुन मयना यह हर अविनाशी । हैं जग-

६ भजनावली ।

नायक मङ्गलराशी ॥ जो होते नहिं यह
जगनाथा । हम सब क्यों होते इन साथ ॥
श्रवण कीन्हि असि मीठी बानी । शान्त
भई कछु तब गिरिनी ॥ नारद गये
शम्भु ढिग तबहीं । कहा बिलम्ब न लावहु
अबहीं ॥ बदलहु प्रभु निज वेष भयावन ।
बने शम्भु तब परम सुहावन ॥ पहिने
अरुण बसन तन माहीं । शीश मुकुट
छवि बरणि न जाहीं ॥ चढ़े सलोनी हय
पर नाथा । गौर बदन मुनिगण सब साथ ॥
दो० ॥ गङ्ग यमुन भालति चमर यह
छवि मयनादेखि । भईमुदित पूज्यो हरहिं
मिटा विषाद विशेषि ॥

चौ० ॥ बैठारघो शिवको तेहि लाई ।
भाँवरि हेतु परम सचुपाई ॥ पढ़त वेद

भजनावली ।

७

तहँ ऋषि मिलि सबहीं । पुष्पवृष्टि भइ
नभते तबहीं ॥ गौरीको माता तब ल्याई ।
ब्रह्मा बेदी आप बनाई ॥ भा तब गिरिजा
शम्भु विवाहा । देखत लोगन्ह सहित उ-
छाहा ॥ जब भइ भांवरि रीति सुहाये ।
मुदित हिमाचल रत्न लुटाये ॥ या विधि
कहत जोरि युग पानी । मैं तुम्हार सेवक
शिवदानी ॥ आवत चरण गरीबनेवाजा ।
भा गृह मोरगेह जिमिराजा ॥ बिदा बरात
भइ तेहि अवसर । आये शिव कैलास
बिहँसि कर ॥ पुष्पवृष्टि नभ भइ तेहि
ठामा । फिरे लोग करि शिवहिं प्रणामा ॥
जपहु सदा मन नाम महेशा । जाते रहे न
दुखलवलेशा ॥ है यह शम्भुचरित्र उदा-
रा । पढ़े सुने जोएकहुबारा ॥ पावे धन सुत

८ भजनावली ।

रहे सुखारी । तापर रहें प्रसन्न पुरारी ॥

दो० ॥ जगन्नाथ प्रभु कीन्हि तुव ब्याह
कथा सम्पूर्ण । मोहुप होइ प्रसन्न शिव
कीजे आशा पूर्ण ॥

अथ आरतीप्रारम्भ ॥

श्रीरामावतारकी आरती ॥ रागगौरी ॥ आरति

रामचन्द्रकी कीजे । जनकसुता के पद चित
दीजे ॥ टेक ॥ शीशमुकुट कर धनुष सुहा-
ई । श्यामगौर शोभा अधिकारि १ भरत
लषण रिपुहन सब भ्राता । हनुमत सेवक
जग विख्याता ॥ ठाढ़े निकट जहां सिंहा-
सन । राजत सिया संग दुखनाशन २
नाम जपत भवसिन्धु सुखाई । जगन्नाथ
धनि जिन लौलाई ३ । १ ॥ श्रीकृष्णावतारकी
आरती ॥ आरति राधाकृष्णहिं कीजे । युगल

भजनावली ।

६

कमल चरणोदक लजि ॥ टेक ॥ शीश
फूल बेंदी अति शोभे । मोरमुकुट चन्दन
मन लोभे १ दृग अंजन नकबेसर राजे ।
कर्णफूल कुण्डल अतिभ्राजे २ मुख आ-
भा निरखत शशिलाजे । उर मोतिन की
माल बिराजे ३ बाजुबन्द कंगन करसोहे ।
मुरली शब्द सुनत मनमोहे ४ नीलाम्बर
पीताम्बर छाजे । कटि किंकिणि पग नूपुर
बाजे ५ शोभित रत्न जडित सिंहासन ।
श्रीवृषभानुलली नन्दनन्दन ६ श्यामकृष्ण
गोरी श्रीराधा । रूपराशि हरि प्रेम अगा-
धा ७ बसहु सदा मम उर दोउ जोरी ।
जगन्नाथ जन कह करजोरी ८ । २ ॥ आ-
रति साजि चलीं ब्रजनारी । गोपसुता वृष-
भानु दुलारी ॥ टेक ॥ मोहन गो गोहन

गृह आये । धूरि पूरि तनु अधिक सुहाये १
 छवि अपार लखि मार लजाई । कर
 बंशी धरि अधर बजाई २ तमअरि सुता
 देखि छवि पीकी । मेटति ताप सखिन संग
 जीकी ३ बैठे रत्न सिंहासन जाई । आरति
 करति यशोमति माई ४ ब्रजललना संग
 आरति गावें । शंखरु घंट मृदंग बजावें ५
 ता छविपर तनमन धन वारी । जन जग्र-
 नाथ जात बलिहारी ६ । ३ ॥

दो० ॥ श्री यमुना तट कदमतर बैठे
 गिरिवर धारि । राधा करति है आरती
 जगन्नाथ बलिहारि ॥

आरती राग ललित ॥ ऐसी मुरली श्याम
 बजाई । मोहि चलीं ब्रजबाला ॥ हरिहरि १
 रास माहिं सखियन भइं ठाढ़ी । बिच बिच

भजनावली ।

११

मदनगुपाला ॥ हरि हरि २ आरति करिके
हरि सँग नाचति । बाजत डफ करताल ॥
हरि हरि ३ सारंगी मिरदंग मंजीरा । किं-
किण शब्द रसाला । हरिहरि ४ जगन्नाथ
मेरे उरमें बसो । भानुसुता नँदलाला ॥
हरिहरि ५ । ४ ॥

अथ युगलावतार की आरती ॥ राग गौरी ॥ आसति

रामश्याम की गाऊं । सिया और राधा
को मनाऊं ॥ १ ॥ राम पुत्र दशरथ के
कहाये । श्याम नन्दसुत नामधराये १
रामसंग श्रीजनककुमारी । श्यामसंग बृष-
भानु दुलारी २ रामसंग कपिसेना राजे ।
श्यामसंग ग्वालनदल राजे ३ रामके मन
हनुमत अतिभाये । श्याम को मन ऊधो
हुलसाये ४ जनजगन्नाथ उभय शिरनाई ।

राम श्याम की आरति गाई ५ । ५ ॥

आरती श्रीगंगाजी की ॥ आरति श्रीगंगामहरानी ।

कलिमल हरणि परमपद दानी ॥ टेक ॥

प्रभु पद धोवन बहि जब आई । आई जटा

शंकर में समाई १ जब शंकर निसरन नहि

दीन्हा । भागीरथ तब तप अति कीन्हा २

तब जग में गंगा बहि आई । सुर मुनि

सन्तन की सुखदाई ३ जो जन तिहि महँ

जाइ नहाये । बिनु सन्देह परमपद पाये ४

असिगंगापद ध्यान लगाई । जगन्नाथ जन

आरति गाई ५ । ६ ॥ आरती श्रीशिवजी की ॥

आरति कीजे उमापति जीकी । मेरति

जेहि आरत सबही की ॥ ७ ॥ शिर सुरसरि

शोभित शशिभाला । नीलकण्ठ गले

मुंडनमाला १ करत्रिशूल ओढ़े बघडाला ।

अंग भस्म गल लपटे ब्याला २ पाव्वती
 सँगरह कैलासा । बाहन बसह विराजत
 पासा ३ हर बम हर बम हरदम जापा ।
 तुरत नशाति सकल मनतापा ४ जोनर
 शंभुकि आरतिगावे । जन जग्रनाथ सकल
 सुख पावे ५ । ७ ॥ आरती श्रीहनुमान्जीकी ॥
 आरति श्रीहनुमान गुसाई । रामदूत जिन
 लङ्कजराई ॥ ६ ॥ कनक बरण तन तेज
 विराजे । हाथ गदा भूधर अतिराजे १
 फांदि जलाधि लंका में आये । सीता सुधि
 रघुपति पहुँ लाये २ मूर्च्छा रामानुज की
 छड़ाई । मारेउ महिरावण दुखदाई ३
 जगन्नाथ चरणन लवलाई । संकटमें सोइ
 करहिँ सहाई ४ । ८ ॥ आरती श्रीदुर्गाजी की ॥
 आरति श्रीदुर्गामहरानी । भयहरणी

सन्तन सुखदानी ॥ टेक ॥ दुष्टदलनि शंकर
 प्रिय रानी । त्रिभुवन स्वामिनि आदि
 भवानी १ रदन एक चख तीन विराजें ।
 कानन में कुण्डल अति भ्राजें २ शुम्भ नि-
 शुम्भ असुरसंहारिनि । महिषासुर मर्दिनि
 अघहारिनि ३ करुणा करहु मातु बलि
 जाई । जगन्नाथ जन आरति गाई ४ । ६ ॥

दो० ॥ भक्तमाल सुखनिधिरची तुलसी
 राम सुजान । जगन्नाथ पढि मुदित तिहि
 आरति कीन्हि बखान ॥

आरती श्रीभक्तमालकी ॥ रागगौरी ॥ आरति की-
 जे श्रीभक्तमालकी । कीरति भक्त श्री भ-
 क्तपाल की ॥ टेक ॥ मन तम टारन मनहुं
 प्रदीपन । प्रियमहि धनसम भक्त महीपन
 १ भक्त करनि बैकुण्ठ निसेनी । राम श्याम

प्रिय अति सुखदेनी २ कलिमलहरणि
 दानि सब काजा । भव बारिधि के तरन
 जहाजा ३ चतुर्विंश निष्ठा जो गावे । म-
 ति रति पाय अन्तगति पावे ४ बन्दि
 चरण भक्कन समुदाई । जगन्नाथ चह भ-
 क्ति कन्हाई ५ । १० ॥

अथ प्रातकाली ॥

राग नटनारायण × ॥ रामका करु ध्यान प्या-
 रे । रामका करु ध्यान ॥ टेक ॥ शिर मुकुट
 कर धनुष राजे सिया लीन्हे साथ । अगु-
 ण ते भे सगुण तन धरि भक्कहित रघुनाथ
 १ बन में खरदूषण को मारेउ हरीसिय
 दशमाथ । युद्धको लड्का सिधारे लिये

× जवाब ॥ रामनामावसी हमारे मन रामनामावसी ॥ नगम-
 येदिलखा ॥

शरधनुहाथ २ रावणहिं असकह मदीदरि
 कन्तसुनु ममवात । प्रीति करिलो राम से
 मिलि नहिं तुकरि हैं घात ३ सुनत रावण
 क्रोध कीन्हा हरिसे कियसंग्राम । जगन्नाथ
 सँहारि प्रभु तिहि फिरे ले सियवाम ४ । १
 किमिरहों विनुश्याम सखिरी किमिरहों
 विनु श्याम ॥ टेक ॥ जाइ हरि अटके हैं
 मथुरा गये हमहिं भुलाय । गोपिपतिहै
 गोपित्यागी सकल सुख विसराय १ क्रूरसो
 अक्रूरलेगो हनेउ कंसहिं श्याम । राजमथु-
 राको भयो अब रखी कुब्जावाम २ कौन
 ब्रज सुधिलेत अबकह राधिका बिलखाय ।
 करहु करुणा हरि कहत अब जगन्नाथ
 सहाय ३ ॥ २ ॥ राग भैरो ॥ + रामकृष्णभज

+ शिवयोगीशगायारे बाबा शिवयोगी यश गायक ॥ आन-
 न्दसगर ॥

बौधरूपनरसिंहशम्भु अविनाशी ॥ टेक ॥
 अवधपुरी में जन्म लियोहै कौशलया मह-
 तारी । लक्ष्मण सिय संगलेय जाइवन हते
 निशाचर भारी १ देवकि गृह अवतार
 लेइके आरत सकल मिटाई । कंस मारि
 उग्रसेन भूप किय लीला अधिक बनाई २
 जयहरि पुरुषोत्तम पुरवासी धन्य धन्य
 प्रभुताई । करिकरुणा दर्शन जेहि दीन्हा
 जन्म तासु फलदाई ३ खम्भफारि आये
 नरहरि प्रभु रति प्रह्लादहिं पाई । ताके
 पितुको उदर बिदारेउ भक्तप भये सहाई ४
 मस्तक गंगविभूति सोह तनु जयशंकर कै-
 लाशी । जगन्नाथको दास जानिके करहु
 दया सुखराशी ५ । ३ ॥ राग बिलावल ॥ *

* गाइये गणपति जगबन्धन ॥ विनयपत्रिका ॥

जागिय ए महाराज कृपागारा ॥ ग्वालबाल
 सब तुम्हरे दरशको । खड़ेहैं आइके तु-
 म्हरेद्वारा ॥ टेक ॥ तुरत सुनत जागे मन-
 मोहन । जाइनिकटमाताकोपुकारा १ मांगि
 कलेउ चले बनमोहन । ग्वाल चले सँग
 लेइ अहारा २ कह जग्रनाथ जो दास तु-
 म्हारा । तुमबिनु कौन मोररखवारा ३ । ४ ॥

अथ भजनारम्भ ॥

भजन गुरुनानकशाहका रागरामकली ॥ * श्री

गुरु नानकके सुभिरनमें लीनरहो मन द-
 मपर दम ॥ टेक ॥ जाके सुभिरत आरत
 भागति पावत सुखनहिं कमकमकम । ऐसे
 गुरुको सुमिरो तुम मन पूरे आस रहे

* रघुनाथ तुम्हारे चरित मनोहर गावत सकल अवध-
 बासी ॥ गीतावली ॥

नहिं गम १ आगम निगम सभे यह गावे
 गुरुको सुमिरो कटत अलम । रेमन मूर-
 ख तू नहिं सुमिरे छाँड़ि दिये अब एकक-
 लम २ जो नहिं राख प्रेम गुरुपदमें करन
 साधु सेवा हरदम । पारहोय किमि भवसा-
 गर वह समभक्त नाहिन नेकु अधम ३
 कर विश्वास भक्तगुरु साधुन हैं रघुनाथके
 समसमसम । जगन्नाथ नानकगुणगावत
 आशरखत गुरुदेवकदम ४ । १ ॥ भजन
 ठाकुरद्वारा ॥ रागगूजरी ॥ † जयठाकुर पुरुषोत्त-
 मपुरमें विराजहीं । सबहिं परमपद दा-
 नि दानि सबकाजहीं ॥ टेक ॥ संतत तुम्ह-
 री कृपा रहेमेरे पर बनी । हमहीं पतितको
 न होय चरण में रतिघनी १ तव दर्शन

† कृष्णजन्म जब भयो है बधावा लेचलीं ॥ आनन्दसागर ॥

अभिलाष अधिक में राखऊं । करुणा
 करहु जेहिजाय दरश फल चाखऊं २
 आपन विरचित ग्रन्थ चरण पै चढ़ाऊं
 में । आपन रचित पवित्र भजन सब गाऊं
 में ३ जग्रनाथ प्रभुपद अनुराग बढ़ाऊं
 में । नाशहोय अघ जाल परमपद पाऊं में
 ४ । १ ॥ शिवजी के भजन ॥ रागकान्हरा ॥ + बलि
 जाऊं तासुपद में कृपाला । जाको शोभे गले
 मुण्डमाला ॥ टेक ॥ माथेपै जाके गंगा वि-
 राजें । अंग विभूति लपट गले ब्याला १
 जाके ललाट में चन्द्र बिराजें । नीलकण्ठ
 जेहिबाहु विशाला २ पार्वती जाके रहसङ्ग
 साथे । हाथ त्रिशूल ओढ़े बघछाला ३
 जन जग्रनाथ जो यह छवि ध्यावे । मेटत

+ तेरो नन्दबलैयालैरे बाला । भुलभुना खेलै नन्दलाला ॥

पातक दुख जंजाला ४ । १ ॥ रागगौरी ॥ +
जप नाम शिवको सनेह मन जाते परम
पद पावई ॥ टेक ॥ एक समय चित्रकेतु
नृप कैलास पर्वत पर गयो । निज तियन
को जहँ सङ्गलिन्हें शिवनिकट ठाढ़ो भयो
१ तहँ गोदमें गौरीकोले शिवज्ञान सिख-
लावत रहे । नृप चित्रकेतु प्रणाम करि
हंसिके लगाया विधि कहे २ तपसी जगत
गुरु ब्रह्मज्ञानी देवता शिव क्या भये ।
छाँड़ि लाज समान निरलज गोद में स्त्री
लिये ३ मन्द मन्द मुसकाइ के जब दीख
शिव चित्रकेतु को । तबगौरि बोली क्रोध
करि यह दुष्ट सिखलावन लगो ४ शाप

+ श्रीरामचन्द्र कृपाल भजुमन हरण भवभयदारुणं ॥

विनयपत्रिका ॥

दीन्हा क्रोध करिके बेगहीं चित्रकेतु को ।
 जन्म ले शठ दैत्य योनि में नाम बृत्राञ्च-
 सुर हो ५ गिरिजा दियो जब शाप तब
 तिहिजन्म निशिचर गृहभयो । अरु नाम
 बृत्रासुरभयो जब मरेउ तब सुरपुर गयो ६
 यह चरित शुकदेव मुनि श्रीभागवत में
 गावहीं । जगन्नाथ जो गावयह भवजलधि
 तरि सुख पावहीं ७ । २ ॥ रागरामकली ॥ *
 हरुशङ्कर सङ्कटमेरो ॥ ४० ॥ जिनके माथे
 पै गङ्गा बिराजे । खात भांग धतूरा ढेरो १
 जिनको शोभे गले मुण्डमाला । बाजे डमरू
 शब्द घनेरो २ जिनको बास कैलास में
 सोहे । रहें गिरिजा जिनके नेरो ३ सबके
 दुख भञ्जनहारे । उनको भजत छुटिहि दुख

तेरो ४ हरिये जगनाथ के दुख को । हमहूँ

हैं तुम्हरे चरो ५ । ३ ॥ दशावतार को भजन ॥

रागपरज ॥ † भजु गोपाल गोवर्द्धनधारी ॥

टेक ॥ जन मन रञ्जन सब दुख भञ्जन

भक्तन आनंदकारी । लयकौतुकसतव्रत-

हि दिखायो मीनरूप प्रभुधारी ॥ कच्छ

होइ मन्द्राचल धारेउ मधुकैटभ संहारी ।

ऐसे रूप धरत जनतारन अलख पुरुष

बनवारी १ जब ब्रह्मा प्रभु आयसु पाके

रच्यो जगत विस्तारी । हिरण्याक्ष धरती

को उठाके गोपाताल मँभारी ॥ करि बाराह

रूप तब धारन गे पाताल मुरारी । हिर-

ण्याक्ष को मारि गिरायो जलपर धरणि

सँवारी २ जब प्रह्लाद को हरिके भजन में

† प्रभु जगपालन गिरिवरधारी ॥ आनन्दसागर ॥

हाटककशिपु निहारी । अतिक्रोधित है
 खड्ग हाथ लिय मारन हेतु सुरारी ॥ कहां
 राम अरु कहां श्याम हैं कर जेहि भजन सु-
 खारी । नृसिंह रूप धरि आये तब प्रभु
 दीन्हो उदर विदारी ३ बामन रूप धरा
 जब प्रभुजी बलि द्वारे पग धारी । तीन
 डेग पृथ्वी प्रभु यांची सन्तन के हितकारी ॥
 शुक्राचार्य कहाराजासे दान न देव भिखा-
 री । गन्धि होय भारी में समायो अन्ध
 कियो सो भारी ४ अमित अधर्म किये जब
 जग में असुरन मुनि दुखकारी । परशुराम
 रूप करि धारन आये गर्वप्रहारी ॥ सब
 क्षत्रिन को नाश कियो है दुष्टन को संहारी ।
 राज दीन विप्रनहिं दियो प्रभु धर्म
 कियो विस्तारी ५ रामस्वरूप होइ जब

प्रभुजी लीन्ह अवध अवतारी । रावण हरि
 सीता को लैगो लङ्का गये खरारी ॥ संग
 हनुमान् चले तहँ आये किय युध असुरन
 भारी । रावणमारि सियाको लाये भापुर
 मङ्गलभारी ६ कृष्ण अवतार लियो जब
 प्रभुजी मारे अमित सुरारी । कष्ट से मातु
 पिता को छुड़ायो कंससे भा युध भारी ॥
 ताहि मारि दिय उग्रसेन को सिंहासन बै-
 ठारी । बालचरित यशुदाको दिखाये धनि
 चरणन बलिहारी ७ जय भगवन्त अनन्त
 सदा गुणवन्त हरण अघभारी । बौधहोइ
 जग दर्शन दीन्हा सन्तन के हितकारी ॥
 अब कलिमें होइहैं अकलंकी मारिहिं वि-
 मुख विचारी । जगन्नाथ अपराध क्षमहु
 मम बने परलोक मुरारी ८ । १ ॥ रामावतार

के भजन ॥ रागपरज ॥ * रघुकुलनन्दन धनुहां
 धारी ॥ टेक ॥ अवधपुरी में जन्म लीन्ह
 प्रभु कौशलया महतारी । विश्वामित्रके यज्ञ
 के कारण मारे अमित सुरारी ॥ तब प्रभु
 जाय जनकपुर माहीं ब्याही जनककुमारी ।
 भरत लक्ष्मण अरु रिपुसूदन हैं आता
 असुरारी १ भरत मातुकी आज्ञा पाके बन
 में गये खरारी । रावण हरि तहँ सीतालैगो
 प्रभु लंका पगधारी ॥ ताको मारि अवध
 फिरि आये सिय संग हर्षित भारी । बैठे
 राजसिंहासन पै प्रभु मख की भूमि सँ-
 वारी ॥ २ ॥ रजक एक प्रभु निन्दा कीन्हीपुनि
 श्रीपति धनुधारी । सीताको बनवासपठायो
 लक्ष्मण संग सिधारी ॥ रहा गर्भ सीतहिं

* प्रभु जगपालन गिरिवरधारी ॥ आनन्दसागर ॥

तेहि अवसर सुनिये सुजन सुखारी ।
 बाल्मीकि आश्रम जिहि बन तहँ तजि
 फिरे लषण दुखारी ३ इत मुनि सियहिं
 भवन निजलाये उत गुरु सजि हय भारी ।
 हाटकपत्र रामयश लिखिके बांध्यो तासु
 लिलारी ॥ रखवारी रिपुहन सेना लेतिहुँ
 दिशि फिरे प्रचारी । नृप सब भे तिनके
 आधीने पुनि सबगे दिशि चारी ४ इत
 सीताके द्वै सुत जाये लवकुश योधा
 भारी । युध विद्या मुनि तिन्हें सिखाई अरु
 रामायण सारी ॥ खेलत रहे बाजि तहँ दे-
 खत बांधि रखा मुदभारी । सेना सारी मू-
 र्च्छित कीन्ही रिपुहन सहित पछारी ५
 समाचार सुनि तब रघुकुलमणि पठवा
 लषण प्रचारी । किय मूर्च्छित सो भरत तब

आये सोउ किय मूर्च्छित भारी ॥ तब रघु-
 पति पुनि आपहि आये सेनालै संगन्यारी ।
 निज सुत लखि प्रभु अन्तरयामी अस
 किय चरित विचारी ६ जानतहं कहु क्षण
 मूर्च्छितभये लेइ मुकुट असुरारी । मातुहि
 दिखरायो दोउ बालक शोचित भइ महता-
 री ॥ आपन सतिते सकल जियाये राजा
 जनक कुमारी । परिचय भयो तबहि सबही
 ते किय प्रभु पुत्रन प्यारी ७ सेना संगलेइ
 पुनि सियपति गमने अवध मँभारी । लव
 कुश बाल्मीकि संग आये होन लगा मख
 भारी ॥ निज सति सिया धरणि में समाई
 फिरनहिं अवध सिधारी । कनकमूर्ति सिय
 की विरचाके मख कीन्हो अघहारी ८ अन्त-
 रधान भये पुनि रघुपति परिजन पुरजन

तारी । सकल लोग सुरलोक सिधाये बैठि
 विमान मँभारी ॥ जिनको नाम जपत अघ
 भागे तिन प्रभु किय मख भारी ॥ आप
 यज्ञकरि नरहि सिखावत सब विधि जन
 हितकारी ६ शरणागतपालक रिपुघालक
 भक्तन लागि अवतारी । आयो श्वान शरण
 में प्रभुकी ताकर दुख दिय टारी ॥ अधम
 उधारन असुरसँहारन पापपुञ्ज दुखहारी ।
 जगन्नाथ लवकुश रामायण या विधि गाई
 सारी १० । १ ॥ मंगल ॥ रागगूजरी ॥ *
 जन्म अवध में भयो दशरथजी के लाल
 को । सुर नर मुनि सब आये देखन
 जगपाल को १ भरि मुक्कामणि रत्न
 औ लाल से थालको । कीन्ह कौशलया

* कृष्णजन्म जब भयो है वधावा लेचली ॥

३० भजनावली ।

दान दुखित कंगाल को २ भाग सराहत
सकल अवध महिपाल को । जगन्नाथ
जिन गेह जन्म असबालको ३ । २ ॥
रागखम्माच ॥ + ऐसो जग बलवान न कोऊ
जैसे हैं रघुनायक मेरे ॥ टेक ॥ सीता ब्याह
करन को जनकजू प्रण कीन्हो धनुहाँ जो
धरेरे । तोड़िके निज भुजबलते दिखावे सोई
श्रीसीताको बरेरे १ आये बड़बड़ भूपसभा
में तिनहिं मध्यमें रावण हेरे । सब मिलि जु-
लिके धनुष उठायो टूटे नहिं बल कीन्ह घ-
नेरे २ कोमल तनपंकज लोचन प्रभु आये
तहँ हर्षात मनेरे । देखि भरोखे ते सिया
विचारति टूटे धनु मेरो भाग बनेरे ३ धनुष

+ आयो आज जनक की नगरी दशरथराजकुमार
अलीरी ॥ अनुरागलतिका ॥

उठाइके तोड़ेउ रघुपति ब्याह कीन्ह तहँ
सीता सेरे । फिरे लजाइ राजा निजनिज घर
जगन्नाथप्राये हरिडेरे ४ । ३ ॥ रागबिलावल ॥ †
सिया रघवीर चरणहीं मनाऊं । जाते घर
बैकुण्ठ में पाऊं ॥ टेक ॥ जटा मुकुट कर
धनुष विराजे । संग में ऋक्ष कपि सेना
छाजे ॥ भाइ लक्ष्मण संग विराजा । श्री
हनुमान करे सब काजा ॥ बन्दौं तव चर-
णं । राजिव नयनं १ हरि लेगयो सिया
को रावन । गे लङ्का हरि त्रिभुवन पावन ॥
संग लिये हनुमान को आपन । रावण हति
किय भूप विभीषन ॥ बन्दौं तव चरणं । क-
रुणाअयनं २ कीन्हा राज सिया संग लाई ।
भेंटे अवधमें चारो भाई ॥ कीन्ह सकल

† गुरुगणेश चरणहीं मनाऊं । विमलज्ञान भाक्ति जेहि पाऊं ॥

देवता तहँ दर्शन । सियासंगलखि भये मुदित
 मन ॥ बन्दौं तुम चरणं । जन सुखदयनं ३
 मातु कौशलया आरतिलावे । भाइ भरतजी
 चमर डुलावे ॥ कीन्हो जगन्नाथ यशगाना ।
 मोपर करहु कृपा भगवाना ॥ आशा है तुम
 चरणं । मोहि दिनरयनं ४ । ४ ॥ रागकाफ़ी ॥ +

जयरघुनायक जनसुखदायक करुणासिन्धु
 धरे धनुशायक ॥ टेक ॥ कमलनयन शिर
 मुकुट विराजे कानन कुण्डल ह्रि वि अ-
 धिकाई । बीड़ा पान धरे मुखमाहीं । दशन
 चमक मोतिन की नाई १ उर बैजन्ती
 माल विराजे कर धनुहाँ की ह्रि वि है
 न्यारी । कटिकिंकिणि पीताम्बर सोहै

+ जानकिनाथ सहाय करें जो कौन बिगार करे नर तेरो ॥

आनन्दसागर ॥

पगु नूपुरकी धुनि भँभकारी २ वाम भाग
 में सियाविराजे पवनकुमार करतरखवारी ।
 खड़े लक्ष्मण भरत शत्रुहन छत्र चमर पंखा
 करधारी ३ पाँवन रेखा नखकी शोभा जो
 जन ध्यान करतहै विचारी । जन जग्रनाथ
 पाप सब बिनशें बसो हृदयमम रूप खरा-
 री ४ । ५ ॥ राग आसावरी ॥ * भज रघुनन्दन
 सीता रे मन भज रघुनन्दन सीतारे ॥
 टेक ॥ शोक मिटावन सब अघदावन
 हरिको भजन पुनीतारे । अस प्रभु यश
 चितदे जो गावत लोभ मोहको जीता
 रे १ जो नहिं भजन राम को होवे बा-
 दिहिं जीवनं बीतारे । एकहु बार भजे

* आज सकारे धेनु दुही में वहै दूध मोहिं प्यायेरी ॥

सूरसागर ॥

३४

भजनावली ।

हारि जो नित कटे पाप सब मीतारे २
ऐसो कृपालदयाल न कोऊ जैसे प्रभु जग
हीतारे । निश्चयकरि जो भजे निशि वासर
तेहि अतितरण सुबीतारे ३ अधमउधारन
सब दुख टारन भक्तन के जो मीतारे । जन
जगनाथ प्रसन्न हैं जापर सो क्या भव भय
भीतारे ४ । ६ ॥ अथ हनुमान्जीके भजन ॥ रागवि

हाग ॥ * भजहु मन मेरो श्रीहनुमान ॥ ध्रु० ॥
फांदि जलधि जिन लंका जारी । लक्ष्मण
जी के बचाये प्रान १ धीरज जाइ दियो
सीता को । दुष्ट को मारिहैं श्रीभगवान २
रावण मारि सिया लाये प्रभू । पायो विभी-
षण अति सन्मान ३ जगन्नाथ हनुमतगुण
गायो । ममदुख हरहु सोईबलवान ४ । १ ॥

* सखीरी दोउ बालक नहिं वनयोग ॥ आनन्दसागर ॥

रागकाफ़ी ॥ * श्रीहनुमान सुनो बिनती । रहू
 मोहिं सहायक कीशपती ॥ टेक ॥ तुम जाँरे
 लंकमें असुरन घर । अकुलाय रहे दैत्यन
 जरजर ॥ १ ॥ सुतबन्धुभये हतरावण
 के । रणमें सँग राम औ लक्ष्मण के ॥ २ ॥
 जब रावण देखी दशा सगरी । तब महिरा-
 वणसे बिनती करी ॥ ३ ॥ दुख सकल
 सुनायो कहिरावण । मोहिं होहु सहायक
 महिरावण ॥ ४ ॥ सुनि सो धरि वेष विभी-
 षण के । आयो दल राम औ लक्ष्मण
 के ॥ ५ ॥ तेहि लीन्ह उठा दुनो भाइनको ।
 उड़ि चलत भयो महिरावणसो ॥ ६ ॥
 तुमहींसो जाइ निकट मारा । शिर फेंकिके

* सुन रे रे मन अनहद सुन । तेरे घटभीतरमें होरही धुन ॥

बहार बृन्दावन ॥

पावकमें डारा ॥ ७ ॥ दुहं गोद में राम
लषणको लियो । तुम सेनादिश प्रस्थान
कियो ॥ ८ ॥ हरिये जग्रनाथ के संकट को ।
अब हे हनुमत रघुपति चरो ॥ ९ । २ ॥

अथ कृष्णावतार के भजनें लोलाके ॥ रागरामकली ॥ *

हरिके चरण मेरे मन भाये ॥ टेक ॥ देवकी
गृह लीन्ह अवतारा । वेही नन्दकेलाल
कहाये १ उनघरघर माखनखाये । यशुदा
गृह उरहन आये २ उन कुंज में चरित
बनाये । देवता सब देखन आये ३ उन
टेको गोबर्द्धन नखपर । उनसर्पसे नन्दछो-
ड़ाये ४ धनि धनि जिन दर्शन पाये । धनि
जग्रनाथ यशगाये ५ । १ ॥ रागदादरा ॥ †

* हरि होगये अन्तरधाना ॥ आनन्दसागर ॥

† मुरलिया कैसेधरे जियाधीर ॥ आनन्दसागर ॥

यशोदा ऐसो चतुर यदुराय ॥ टेक ॥ कौन
 यतन माखन रखूं का मैं करूं उपाय । ऐसो
 मोहन है तेरो घरघर रहत लुकाय ॥ संग
 ग्वाल के बाल ले धाम हमारे आय ।
 ऊखल चढ़ि दधि खात है औरहु देत लुटा-
 य १ कोइ जो कहै तुम क्या करो मेरे धा-
 महिं आइ । मैं जाना घर आपनो तब अस
 कहत कन्हाइ ॥ धरन जो चाहों भजत तब
 दधि आंखन में नाय । कहति मातु अब
 जाहि जब तब लैहो धरिधाय २ एक दिवस
 हरि को धरयो ग्वालिन जबहिं रिसाय ।
 ताके पति के हाथ को पकड़ायो यदुराय ॥
 उरहन को यशुमति निकट ग्वालिन पहुँची
 धाय । निजपति लखि लज्जितभई फिरीभ-
 वन मुसकाय ३ धनि देवकि बसुदेव हैं जिन

सुत भे यदुराय । धनि गोपी अरु ग्वाल
 हैं धनि यशुमति नंदराय ॥ को महिमा
 गावनसके ब्रजबनिता समुदाय । त्रिभुवन
 पति जिन संगरमें कह जग्रनाथ सहाय ॥ य-
 शोदा ऐसो चतुर यदुराय ४ । २ ॥ रागमलार ॥
 * यशुदा सुनिलेहु अर्ज हमारि गोपिन
 सब विनतीकरें ॥ टेक ॥ प्रातसमय हमजल
 लावन को चलीं यमुन जल ओर । उतसे
 आये राउर बालक कीन्ह बहुत भकभोर ॥
 फोरिके गागर इंदुरी बहाई खींचेउ अंगको
 डोर । देखनमें तो छोट अधिकहैं पर हैं रसके
 चोर १ जब मैं बांधेउं मनमोहन को ऊखल
 में लेइजोर । तुमहीं आय कहति रहि खो-

* ऊधोतुरतहि मधुपुर जाहु कन्हैयाको लेआवहुरेको ॥ आ-
 नन्दसागर ॥

लन अब क्यों कीन्हों शोर ॥ लज्जित
 फिरीं सखी सब तबहीं आये नन्दकिशोर ।
 कहा मातु ये नैन सैनदैं उलटा उरहन
 लावैं जोर २ रिस करि तब बोली नँदरानी
 वे बड़ि जोवन जोर । अब कि बार जे
 उरहन लैहैं ते पठवों मुखतोर ॥ जगन्नाथ
 त्रिभुवनपति जाकी बेद न जानैं शोर ।
 भक्ति बिबश सो ब्रजनारिन सँग बिलसत
 नवलकिशोर ३ । ३ ॥ रागजाजवन्ती ॥ * यशु-
 दा री सुनु रीति मोहनकी ॥ टेक ॥ जात
 यमुनतट लावत अटपट । बरजति सुनत
 न बात सुनन की १ मेरो ढोटा अभी बड़
 छोटा । बानपरी तुम को उरहन की २ तुम
 सांची तुम्हरो सुत सांचो । हमहीं नजानति

रीति कहन की ३ जगन्नाथ प्रभु भक्ति
 विवश असि । लीला करत रिभावन
 मन की ४ । ४ ॥ रागरामकली ॥ † हमते देखो
 श्याम लुकाये ॥ टेक ॥ सुनु हरि सुनु हरि
 सुनु हरि । तुम्हरे बिनु कहु न सोहाये १
 चलु सखि चलु सखि चलु सखि । चलु
 सखि लावें मनाये २ कुंजमें कुंजमें कुंजमें ।
 जाइके रहे हैं छिपाये ३ जब दूढ़त दूढ़त
 पाये । तब गोपिन अङ्गलगाये ४ हमहूं
 हरि आश लगाये । कह जन जगन्नाथसहा-
 ये ५ । ५ ॥ संगीत राग भौरो ॥ * जयजय यदुबीर
 बीर कंसको पछारो ॥ टेक ॥ कककक कंस
 नृपतिययययज्ञकरत । नननननन्दलाल

† हरि होगये अन्तरधाना ॥ आनन्दसागर ॥

* ताण्डव गति मुसुडनपर निरतत बनवारी ॥ आनन्दसागर ॥

यज्ञकोउजारो १ कुकुकुकुबलयापीडचच
 चच चाणूरादि । ममममममल्ल प्रबलसबको
 हरि मारो २ दददद दैत्य मारि मममम
 मखउजारि । कककककंसमारि सबकोदुख
 टारो ३ हहहह हरि मोहिं देहु । निनिनिनि
 निज चरणनेहु ॥ जजजज जगन्नाथ तुम
 पद मन वारो ४ । ६ ॥ रागमट ॥ * जबसे
 सुनो ऐसो बैना ये ऊधो रैनि दिवस नहिं
 बैना ॥ टेक ॥ श्याम कह्यो है योग करनको
 हमसे योग बनैना । संगमें उनके जन्मसे
 रहि आई सोइ चिन्ता दिन रैना १ हरि
 कारण हम व्याकुलजिततित फिरहिं दिवस
 अरु रैना । पाहिलेसे काहे को प्रीति लगाई

* कैसी लेआयेहौ पाती ये ऊधो कैसी ले आये हौ पाती ॥
 आनन्दसागर ॥

४२ भजनावली ।

नीर बहे दोउ नैना २ इन्द्रको कोप भयो
जब ब्रज पर तब राखो बल ऐना । सो
अब छोह न राखो हमारो कुब्जाकरे
सँग शैना ३ ऐसो जो जानति हम उनको
छल तो जाने देति तबैना । जन जगन्नाथ
जो पावहिं पर हम उड़ि जाहिं जहँ सुख
देना ॥ ४ । ७ ॥ रागदेश ॥ † सो संग तजि
भाजि गये ह औररी ॥ टेक ॥ जबते मोहन
त्यागि गये हैं । क्षण जिमि घ औररी १
बछरू गौ जलपान न करहीं । निरखत ख
औररी २ ऊधो जो तुम प्रभु को न लावो ।
यमुनामें म औररी ३ जगन्नाथ आवहु नट
नागर । आशा हैं घ औररी ४ । ८ ॥*

† आज हरि कहां गये नेहड़ा लगाय ॥ आनन्दसागर ॥

* माव कण्ठ दधीगये खाररी ॥ आनन्दसागर ॥

सखि ऐसे छली यदुराईरी ॥ टेक ॥ हम
 ते कहेउ हरि आयब फिरिके । दिवस
 अमित बिसराईरी । कह राधा अबलों
 नहिं आये मे ऐसे निठुर कन्हाईरी १
 मारा कंस जाय मथुरा में पायो राज सुहा-
 ईरी । लोभि रहे वाहि राजपाट में गोपिन
 इत बिलखाईरी २ दीन्हो ऊधो को तहँते
 पठाई योग कथा सिखलाईरी । ललिता
 कहे कुब्जा की है करनी । राखे श्याम
 लुभाईरी ३ भइ ब्याकुल अति मातु
 यशोदा पठाई मुरलि मिठाईरी । ऊधो
 जाय बहुरि मथुरा में कहि गति सबन
 सुनाईरी ४ मे सोचित सुनिके अति माधो
 राधाकी सुधि आईरी । जन जग्रनाथ मिले
 गोपिनते तनधरि द्वारका बसाईरी ५ । ६ ॥

अथ विनय ॥

रागसोहनी ॥ * धनि हरि ठाकुर मोहन प्यारे ॥
 टेक ॥ लिय अवतार भक्तहित तुम प्रभु
 दुष्टन मारिके सन्त उबारे १ लिय बसुदेव
 गेह अवतारा । कंसहिं मारि सकल दुख
 टारे २ भक्ति बिबश यशुदा गृहमाहीं ।
 ऊखलमें बाँधिगये एकबारे ३ जगन्नाथ तुम
 पद चितलायो । नाथ रहहु तुम मोहिं रख-
 वारे ४ । १ ॥ रागगट ॥ † धनि हरिकर्ता
 सकल संसार ॥ टेक ॥ जाको सुमिरे सकल
 देवतागण । इन्द्र बरुण मुखचार १ सुमिरे
 से जाके अधम दुष्टगण । भवसागर उ-
 तरे पार २ होत न मुदित जो हरिचर्चा

* जाइके यशुदासे कहंगी ॥ अनुरागलतिका ॥

† ऊधो धनि तुम्हरो व्यवहार ॥ आनन्दसागर ॥

सुनि । ताको कहूं न उबार ३ जनजग्रनाथ
 कहे करजोरी । प्रभुगति अगम अपार
 ४ । २ ॥ रागपरज ॥ † भजयदुनन्दन आ-
 रतभंजन यदुनन्दन भजरे मतिमन्दा ॥
 टेक ॥ अवगुण सागर यह भवसागर नि-
 तकर सुमिरण गिरिधरनागर । माया लोभ
 विवश जग मरना । कैसे है भवसागर
 तरना १ कलियुग में एक हरिको भजन
 है । और सकल भूठा परिजन है ॥ हरि
 यश हरिगुण जो जहँ गावें । सकल देव
 तीरथ तहँ आवें २ आगम निगम सबे यह
 गावें । विनु हरि भक्ति के को गति पावें ॥ ऐसी
 समुक्ति भजले भगवाना ॥ जाते है सुरपुर
 को जाना ३ तुम प्रभु ज्ञान दयाके सागर ।

† भजगोविन्दं भजगोविन्दं गोविन्दं भज मूढमते ॥ मोहमुद्गर ॥

विनति करत सुनिये नटनागर ॥ जनजग्र-
 नाथ शरणमें तुम्हारी । यमपुर देहु छोड़ाइ
 मुरारी ४ । ३ ॥ रागदेश ॥ कलिमल हरना
 श्याम सुमिरना गहो कृष्ण की शरना ॥
 टेक ॥ जो कछु मिले भोग तुम लावो मन
 से करो सुमिरना । है सन्तुष्ट स्वामि जब
 तुम्हरो । तब क्या यमसे डरना १ नहिं
 सन्तुष्ट है काहुसे श्रीपति धन दौलत सब
 स्वपना । एक प्रीति वह सांची चाहें प्रिय
 जाने तब अपना २ करें देवता सब पछि-
 तावा प्रिय है नरतन धरना । एकै दिन
 करिके तपस्या । मिले दरश हरिचरना ३
 सकल काम जंजाल छॉड़िके चाहिय प्रेम
 हरिचरना । जगन्नाथ कह येहीबानी अन्त
 समय है मरना ४ । ४ ॥ रागदेश ॥ मनमो-

हनये । पुरवोमेरि आस ॥ टेक ॥ गिरिवर-
 धारि बिहारी ये । भक्तिहो मेरी प्रकास १
 दीनदयाल मुरारी ये । दीजे दृढ़ विश्वास २
 हरिभक्तन पद प्रेमलगे । ना ह्वै यमते त्रास ३
 जगन्नाथ हरि गाइ कहे । मैं तो तुम्हारे
 दास ४ । ५ ॥ राग टोड़ी ॥ † भक्तपर कृपा-
 ल और दीनपर दयाल हैं । ताहिते तो
 श्यामनाम गाये भक्तपालहैं ॥ टेक ॥ ग्राह
 से छोड़ायके गजराज को उधारोहै । कन-
 ककशिपु को मारिकै प्रह्लाद को उबारो है
 १ द्रौपदी को चीर नाथ धाड़के बढ़ायो है ।
 नखपर गिरिराखि ब्रजके लोग को बचायो
 है २ किंकरोंसे एकनाथजगन्नाथ दास है ।

† दीनानाथ दीनबन्धु याहिते कहाये हैं । द्रौपदीको लाज
 राखि द्वारका ते धाये हैं ॥

रहु सहाय शरणजानि चरणकंज आस है
 ३।६ ॥ रागकल्यान ॥ † राधाबर कमल चरण
 भजमन अशरण शरण कृपासिंधु दीनबंधु
 सन्तन हितकारी ॥ टेक ॥ कमलनयन
 तिलक भाल शीश मुकुट उर विशाल ।
 किंकिणि कटि पीत बसन हाथ मुरलि
 धारी १ राधाजू सङ्ग सङ्ग लाजत छवि
 लखि अनङ्ग । ललिता चन्द्रावलादि गोप
 की कुमारी २ कुंजन श्यामारु श्याम वि-
 चरत सँग गोपवाम । देखत छवि मन
 सिहाति देवन की नारी ३ ऐसी छवि
 ब्रजविलास होवे मम हृदय बास । गाँव
 जग्रनाथ दाससुनिये गिरिधारी ४ । ७ ॥

† कौशल्या बिलोके बदन बारिद सुषमा के सदन क्षुद्धित
 पय पान हेत सुसुकि सुसुकि रोवे ॥ आनन्दसागर ॥

अथ होली प्रारम्भः ॥

रागकाफ़ी ॥ * सिया राम राज सुनि

अवध मचो है अनंद ॥ ध्रुव ॥ ब्रह्मा
विष्णु महेश सब आये । औ गन्धर्व अधिक
यश गाये । बाजत ताल मृदंग १ नारद
आदि सकल मुनिबृन्दा । मिले राम जी
से सब सुखकन्दा । बरौ यश बहुरंग २
बाढेउ सुख सम्पति पुरवासी । किय दर्शन
सिय राम अविनासी । बाढी हर्ष उमंग ३
मातु कौशिल्या आरति लावे । तासु चरण
जग्रनाथ मनावे । देहु भक्ति सतसंग ४ । १ ॥
† सांवरो ब्रज धूम मचाई ॥ टेक ॥
घर घर से निकसीं ब्रज बनिता जल भरने

* प्रण येही मेरो इक रामसे खेलूं मैं होरी ॥ आनन्दसागर ॥

† ब्रजमें हरि होरी मचाई ॥

को जाई । कंकर फेंकि गगरि हरि मारे ।
 कह गोपिन मुसकाई । देहिं ऊखल बँध-
 वाई १ सुनत बचन रिसकरि मनमोहन
 इंदुरी दीन्हि बहाई । छीनि भूपटि गागरि
 नागरि की । दीन्हीं फोर गिराई । जाहु
 मोहिं लेहु बँधाई २ जाइकहा सुनिले नँद
 रानी ऐसे ढीठ कन्हाई । जल भरने यमुना
 नहिं पावें । गागरदेत गिराई । इंदुरी देत
 बहाई ३ तुम ग्वालिन योवन मद माती
 भूठी कहति बनाई । बाँधत हरि छुड़वन
 हित धाई । अब नहिं कहत लजाई ।
 कहतिहैं यशोदा माई ४ हे नँदनन्दन हे
 मनमोहन लीला अधिक बनाई । जन
 जग्रनाथ रची यह होरी । गोपिन हरि
 सिधाई । जीति गये कँवर कन्हाई ५ । २ ॥

श्याम खेलत राधा से होरी ॥ टेक ॥ इत
हरिग्वाल सखासँग निकसे उत राधा सँग
गोरी । बांधेदल दुहुँदिशि भयेठाढ़े । इत
दल ग्वाल खडोरी । उतै सब गोप
किशोरी १ केसर रंग हाथ पिचकारी लीन्हे
अबिरन भोरी । पोरत अङ्ग परस्पर
हिलिमिलि । एक एक तनपोरी । तहां
भजिजात बहोरी २ भरि भरि मूठ
गुलाल चलावत हूहू शब्द करोरी ।
बाजत ताल मृदङ्ग तमूरा । गावत सब
मिलि होरी । लसत तनु रङ्ग भरोरी ३
धनि धनि ब्रज धनिधनि ब्रजग्वालन
धनि धनि ब्रजकी गोरी । धनि जग्रनाथ
मगन हरि रङ्गमें । धन्य किशोर किशोरी ।
सदा जीवें दोउ जोरी ४ । ३ ॥ मेरोमन

हरलीन्ह कन्हार्इ ॥ टेक ॥ जिन मथुरा में
 जन्म लियो है गोकुल में रहे जाई । कंस
 पूतना तहां पठाई । दूध पिलावन आई ।
 हती क्षणमें यदुराई १ श्रीधर विप्र बहुरि
 ब्रज आयो परिणित रूप बनाई । जीहा
 दीन्हीं मरोरि मुरलिधर । रोवत मथुरा
 जाई । कंसको खबरि जनाई २ मारि
 अघासुर आदिक मोहन कुंज में लीला
 बनाई । राधा ललितादिक गोपियनसँग ।
 रास रच्यो सुखदाई । चरित सब बरणि न
 जाई ३ मथुरामें जाइ कंसको मारेउ लिये
 पितु मातु छुड़ाई । कुंडिनपुरमें रुक्मिणि
 ब्याही । शोभा बरणि न जाई । द्वारिका
 नगरी बसाई ४ रहत सदा ब्रजमें यदुनंदन
 लीला करत सदाई । जन जग्रनाथ धन्य

नन्दयशदा । लीला जिनहिं दिखाई । धन्य
 गोपी समुदाई ५ । ४ ॥ † निबहो नेह
 राधिका बरसे ॥ टेक ॥ दीनदयाल भक्त
 आरतहर । नेहरहे राधा यदुबरसे १ युगल
 चरण पङ्कज निशि वासर । भक्ति अभय
 मांगों गिरिधर से २ जन जग्रनाथ
 यही चाहत है रहे न बिलग मन नन्दकुंवर
 से ३ । ५ ॥ रागपोलू ॥ * भजहु मुरारी
 बनवारी गिरिधारीरे ॥ टेक ॥ मनमोहन
 भजु मधुसूदन भजु । भजिलेहु कुंजबिहारी
 रे १ गोवर्द्धनधर भक्तारतहर । भजु
 वृषभानदुलारीरे २ मुरलीधर प्रभु लीला-
 कारी । भक्तनके दुखहारीरे ३ नन्दनन्दन

† निबहो नेह जानको बरसे ॥ आनन्दसागर ॥

* भरि पित्रकारी से मुरारी रंग डारीरे ॥ आनन्दसागर ॥

हरि नटवरनागर । कृष्ण जगत सुखकारी
 रे ४ गोपीनाथ यशोदानन्दन । श्रीपति
 गर्वप्रहारी रे ५ जन जग्रनाथ भजे मोहन
 छवि । दीनानाथ विचारी रे ६ । ६ ॥ रागदेश ॥
 † शरण राखु श्रीकृष्णचन्द्र मोहिं मैं
 राखहुँ तुम आस ॥ टेक ॥ शोभे पिताम्बर
 हाथ में मुरली । ब्रजमें करत विलास १
 गोकुल माहिं पूतना मारी । गोपिन सङ्ग
 किय रास २ कंसमारि मेटो दुख सबको ।
 किय द्वारकामें बास ३ या जग्रनाथ के
 नाथ तुम्हींहो । हम दासनके दास ४ । ७ ॥
 विनु भगवान कैसे खेलें होरी रामा लगत
 कुंजनवां उदास ॥ टेक ॥ जबते गोपाल

† राजा जनकजी की परमसुन्दरी नित शिवपूजन जात ॥

आये मधुपुर रामा । परी हैं विरह के
 फांस १ कहिगये हमसे कपट छलकरि
 रामा । फिरि आयब तुमपास २ आये
 गोपाल गोपिन दुख देखि रामा । गोपियन
 कीन्ह बिलास ३ जन जग्रनाथ रची यह
 होरी रामा । हमरी पुरावहु आस ४ । ८ ॥
 † यमुना किनारे न जाव सखीरी भावत
 नाहिं डगर है ॥ ध्रु० ॥ अबतक रहे हरि
 मथुरा में अब । जैहें द्वारिका खबर है १
 निकट रही सखि मथुरानगरी । दूर
 द्वारिका नगर है २ कैसे रहब सखी बिन
 नँदलाला । असि यमुनाकी लहर है ३
 को अब गोवर्द्धन ते बचावे । सहस
 नयन को डर है ४ जगन्नाथ एकदास

† लोगकहैं वेतो ब्रज में बसतहैं मेरे मोहन मेरे घर हैं ॥

तुम्हारो । तुम्हरी कृपापै नजर है ५ । ६ ॥
 राग परज ॥ * कैसे नन्द नन्द बृषभान
 नन्दनी राजत हैं दोउ जोरी ॥ टेक ॥ माघ
 बसन्त जबै ब्रजबीत्यो होली को दिन
 पहुँचोरी । नवलकिशोर चले होरीखेलन ।
 बरसानेकी ओरी १ नवलश्याम इत से
 रँगपेरें उतसे नवलकिशोरी । नवल सखा
 सब सङ्ग विराजें । नवल सकल उत
 गोरी २ लीन्ह पकरि हरिको बरजोरी
 नारिको रूप कियोरी । नयननमें काजर
 भरि दीन्हो । लीन्ह पिछोरी छोरी ३ मातु
 यशोदा गोपिन न्योती फगुवा में हरि
 को चहोरी । जननी सुनि आनन्दित भइ

* ऐसी होरी खेल जामें दुरमत लाज रहोरी ॥ आनन्द-
 सागर ॥

अति । जन जग्रनाथ कहोरी ४ । १० ॥

अथ चैत ॥

† सङ्गमें श्रीहनुमान मोरे रामाहो ॥
लङ्काचले राम लछिमन ॥ ध्रु० ॥ जाइके
तीर समुद्रपै पहुँचे । रावण उर भइ त्रास १
कपिसेना लीन्हें संगसाथे । दैत्यन कीन्ह
बिनास २ मारे कुम्भकर्ण अरु रावण ।
पालो विभीषण दास ३ जगन्नाथ प्रभु
सीतालाइके । कीन्ह अयोध्यामें बास ४ । १ ॥
आयो चैतको मास मोरे रामाहो मोहन
मथुरा में झाये ॥ टेक ॥ भूलिगये गोपियन
की प्रीती । कुब्जासे नेह लगाय १
चैताकी अति राति सोहावनि । विनु हरि

† मिलने को सुदामा आये श्रीकृष्णजी के यार ॥ आनन्द-
सागर ॥

कैसे सोहाय २ कीन्हि प्रीति तब बारी
 उमरि में । अब क्यों दर्द बिसराय ३ जात
 समय हरि मथुराके मग । कहिगये हम
 से बुझाय ४ सब गोपी रहु कुशल क्षेम
 से । भेंटकरब फिरि आय ५ ऊधो जाइ
 श्यामको लावो । कह जग्रनाथ सहाय
 ६ । २ ॥ * सुनु यशुदारी हमरो बचनवां
 होरामा ॥ टेक ॥ मथतीरही मैं दधिया
 अपने अँगनवां होरामा । धाम मोरारी
 आयो मोहनवां होरामा १ छोटीसो बालक
 रामा तुम्हरो ढोटनवां होरामा । माखन
 खार्डी धरेऊ योबनवां होरामा २ इहां
 होत छोटा रूप देखेमें सोहनवां होरामा ।

* काहे के घैलवा रामा काहेकी डोरिया हो रामा ॥ आनन्द-
 सागर ॥

भजनावली ।

५६

देखि सखियांरी बनत जवनवां होरामा ३
कहती यशोदा माई सुनुरी बचनवां हो
रामा । कान्हां मोरारी निपट अनजनवां
होरामा ४ खेलत हरि कह माता सुनहूं
कहनवां होरामा । भूठो ग्वालिन है देती
उरहनवां होरामा ५ जन जग्रनाथ गावे
चैता मगनवां होरामा । फिरीं सखियां रे
अपने भवनवां होरामा ६ । ३ ॥

अथ बारहमासा ॥

राग काफ़ी ॥ † बार २ सखि विनति

करति हैं काहे श्याम तजी ब्रजनारी ॥
टेक ॥ चैतमास सखि फूलत बेली अरु
बैशाख में ब्याह कुंवारी । जेठमास बर

† तकती रही मधुपुरकी डगरमें ॥ आनन्दसागर ॥

पूजा होवति है भावति नहिं विनु कुंज
 विहारी १ असाढ़ मासमें नीर परत अति
 सावन पवन चले सनकारी । भादवँ में
 सखि चमके विजुलिया कांपत अङ्ग बिना
 बनवारी २ आश्विनमें सखिहोत दशहरा
 कातिक दीपककी छवि न्यारी । अगहन
 में कैसे सोहे भवनवां मधुपुरसे नहिं आये
 मुरारी ३ पूसमास अति परत तुषारा माघ
 बसन्त अधिक दुखकारी । फागुन फाग
 लाग अति फीको जन जग्रनाथ बिना
 गिरिधारी ४ । १ ॥ रागभरथरी ॥ † माधो
 न आये वृन्दावनमें भइँ विकल ब्रजबाल ॥
 टेक ॥ असाढ़मास घन गरजत हो सावन

† ऊधोजी कन्हैया कहां छाँड़ेउ ॥ राधा विकल विहाल ॥
 आनन्दसागर ॥

भरि गये ताल । भादों निशि अँधियारी
 है नहिं आये नन्दलाल १ आश्विन
 खबरि न लीन्ही हो कातिक भइँन निहाल ।
 अगहन आनशृंगारसे भा अधिकउर
 साल २ पूस सेज लागे सिहरी हो माघ
 अधिक बिहाल । फागुन नैन जो फरकत ऐहँ
 मोहनलाल ३ चैतहिं मदन सतावत हो
 सोइ बैशाखको हाल । जन जग्रनाथ मुदित
 भई जेठ भेटे गोपाल ४ । २ ॥ रागगौरी ॥
 * प्रथम ऋतु जो बसन्त आई चैत अरु
 बैशाखरी । बडि आश मनमोहन मिले
 पूजी नहीं अभिलाखरी १ द्वितिय ऋतु
 ग्रीषम जो आई जेठ और असाढ़री । बढ़ति

* जप नाम शिव दिलदेके मन जाते परमपद पावई ॥
 इसी में है ॥

लव हरि दरशकी जिमि गरज घन की
 बाढ़री २ तृतीय ऋतु वर्षा जो आई सा-
 वन भादों मासरी । जलधार बहति सरित
 ते जिमि तिमि नैन नीर उदासरी ३ चौथी
 शरद ऋतु अबसखी आश्विन औ कातिक
 आइरी । उन सांवरो ब्रजराज बिनु कैसे
 रहो ब्रज जाइरी ४ अब पांचवीं हेमन्त
 ऋतु अगहन औ पूसहिं लागरी । नहिं
 आये गोपीनाथ ब्रज में विकल हम
 ब्रजनागरी ५ छठवीं शिशिरऋतु माघ
 फागुन अब सखी ब्रजलागरी । जगन्नाथ के
 नाथबिनु भावे बसन्त न फागरी ६ । ३ ॥
 रागमलार ॥ † अरी कौन मधुपुर जावेरी सो
 राधापायो दुख भारी ॥ टेक ॥ असाढ़मास

† अरी कोइ कागज बांचोरी ॥ आनन्दसागर ॥

बादल घुमड़ाय । घुमड़ि २ बरसे भर-
 लाय ॥ घनगरजे लरजे अति गात । विनु
 घनश्याम रहो कैसे जात ॥ नयन ढर बारी १
 सावन मन भावन नहिं धाम । घर घर
 भूला लगावे बाम ॥ भूलें हिंडोला गावे
 गीत । लागत हम को सबे अनरीत ॥
 बिना कंसारी २ भादों मास रयन अंधि-
 यारि । भूमकि २ अति बरसत वारि ॥
 हम धानी भीजति ठाढ़ी पौर । कब ऐहें
 हरि मिलिहें दौर ॥ भरोसो मुरारी ३
 आश्विनमास अधिक उरआस । जाय
 कोइ मनमोहन पास ॥ विप्र जेवाइ दिये
 बहुदान । कब ऐहें हमरे भगवान ॥
 सबहिं सुखकारी ४ कातिक आयो फूले
 कांस । अबलों न पूजी हमारी आस ॥

भारत दीप सकल संसार । हमको लागे
 उदास बजार ॥ न भावे दिवारी ५ अगहन
 चीर पहिरि सब अङ्ग । सोवति अपने
 पिपा के सङ्ग ॥ भावे हमें कैसे बिनुहरि
 रैन । कुब्जा करे मोहन संग चैन ॥ भई
 हरिप्यारी ६ पूसमास अति परत तुषार ।
 अबहं न आयै नन्दकुमार ॥ लोभिरहे
 कुब्जा संग सेज । राखे श्याम लगाइ
 करेज ॥ करी हरियारी ७ माघमास सखि
 होत बसन्त । हमको न भावे बिना भग-
 वन्त ॥ मटी नहीं गोपियन की पीर । मटे
 कहा फिर तो जाति अहीर ॥ निठुर
 बनवारी ८ फागुन जरती विरहकी आग ।
 कुब्जा खेले हरीसंग फाग ॥ जेहिलागि
 श्याम तजी ब्रजनारि । धनि चेरी तेरी

बलिहारि ॥ तू मोहे बिहारी ६ चैत न भावे
जो फूलेफूल । मधुपुर रहि हमको गये
भूल ॥ ऊधोजाय कहो सबहाल । तुम्हरे
विरह व्याकुल ब्रजबाल ॥ सखिन क्यों
विसारी १० वैशाखमास छावे घर सब
कोय । हमको न भावे बिना हरिसोय ॥
बाढो अधिक विरहको तेज । काहे श्याम
हमें दियोतेज ॥ मिलहु दुखहारी ११
जेठहि ऊधो सुनायउजाय । तुरतहि कूच
कियो यादवराय ॥ मेटी सकल गोपियनकी
पीर । जन जगनाथ धरो अब धीर ॥ मिले
गिरिधारी १२ । ४ ॥

अथ तिष्ठाना ॥

रागझलार ॥ † श्याम मोही सकल ब्रज-
 नारी ॥ टेक ॥ वेष बनाइ लियो गोपीको ॥
 चलतचाल जैसेहोयछबीली । जाय यमु-
 नतट ठाढ़भये ॥ करत शब्द घुंघुरुको ।
 भनकृत भनकृत भननननन १ जानि
 ग्वालिकोइहैस्त्री । ले आई आपनधाम बिहँ-
 सिके । चरण परवारि दीख रस रसिके ॥ गये
 लिवाय कुंजवन माहीं । कीन्हों तहँ बिलास
 आनन्दित ॥ अचरज मान्यो ग्वालि श्याम
 लखि । गावे जगन्नाथ यशहर्षित ॥ भागि
 जात पातक सब सुनिके । भनकृत भनकृत
 भननननन २ । १ ॥ अथ कजरी ॥

रागकजरी ॥ बरजो बरजोरी यशोदारानी

† बनमें आली बाजै वंशो ॥ आनन्दसागर ॥

आपन मोहना । भला बरजो न माने
 कान्हा काहू बचना ॥ टेक ॥ जातीरही में
 यमुना जलभरना ॥ भला कँगना को
 शब्द सुनि के धायो मोहना १ केतनो में
 करूँ रानी कान्हाको मना । भला बारबार
 तबहूँ आवे निरखे जोबना २ सुनिलो
 बचन मोर गोपी मानो कहना । मोरे कान्हा
 को कबहूँ न ऐसो लछना ३ ताही समय
 आये हरि आपन अँगना । माता भूठो है
 ग्वालिन तुमको देती उरहना ४ सुनिकै
 भई लज्जित सो गोपीतखना । भला क-
 जरी बनाई जग्रनाथ मगना ५ । १ ॥

अथ गीतगोविन्द ॥

दो० जो यागीतगोविन्दको भोगखोजमनलाय ।
 आदिकोइकइकवर्णलेनामामिलेतिहिआय ॥

गीतगोविन्द राग कान्हरा ॥

दाससुखद हरि शंखसँहारन । जय जय
मीन रूप किय धारन १ सन्तनहित
सधु कैटभ मारन । भे कच्छप जय २
भय हारन २ जय कनकाक्षको मारि
गिरावन । प्रकटे शूकर रूप भयावन ३
गरजि कशिपु के उदर विदारन । भे
नरसिंह रूप दुख टारन ४ नर तनु धरि
पावन मनभावन । बलिहिं छलेउ
धनि २ हरि बावन ५ नाश करन
क्षत्रिन के कारन । भे हरि परशुराम सुख
कारन ६ थल लंकामें मारेउ रावन । जय
हरि रामरूप मनभावन ७ सकलारत
पितु मातु निवारन । कृष्ण अवतार
लियो जनतारन ८ हाथ जोरि बिनवत

जिहि सुरजन । बौधरूप सन्तन दिय
दर्शन ६ यहि विधि अकलंकी तनुधारन ।
करिहैं प्रभु असुरनसंहारन १० । १ ॥

रागजैतश्री ॥ † सब घटवासी अन्तरयासी

श्रीरघुपति रघुराई ॥ टेक ॥ मीन रूप है
वेद निकाले । कच्छ टेकु गिरिजाई ॥ होइ
बाराह उठाई धरणी । जल में बहुरि
बसाई १ नरहरि है प्रह्लाद उवाख्यो ।
वामन छलो बलिराई ॥ परशुराम है क्षत्रिन
मारे । त्रिभुवन के सुखदाई २ राम होइ
के रावण मारेउ । कृष्ण कंस दुखदाई ॥
बौध होइ जग दर्शन दीन्हा । दीनानाथ
कन्हाई ३ कलिके अन्त अकलंकी होइहैं ।

† गोविन्दे गोपाल गदाधर गोविंद की यह बानी ॥
आनन्दसागर ॥

हतिहैं खल समुदाई ॥ जगन्नाथ हम प्रभु
चरणन को । बन्दतहैं शिरनाई ४ । २ ॥

अथ ठुमरी ॥

रागखम्माच ॥ † श्याम के ढूढ़न कारण
ग्वालिन रमति फिरें सगरो बनबन ॥ टेका ॥
गोकुल नन्दगांवमें ढूढ़ें । श्री बृन्दावनकुंज
सघन १ जाइ यमुन लखि रेख पांव की ।
हर्षित भइँ सबही मनमन २ आई तहँ
राधा जू सन्मुख । लागीं पूँछन हरिको
गमन ३ अतिव्याकुल गोपिन को देखी ।
आय मिले सबसे माहन ४ जन जगन्नाथ
दया हरि कीजे । मोहिं आश तुम दिवस

† हों जिसपै फ़िदा गुलहाय चमन देखो श्यामवरन यक
कामिनियां ॥ नगमयेदिलकश ॥

रयन ५ । १ भजत रैनदिन तुम्हरे च-
 रण । प्रभु करहु कृपामोहिं जानि शरण ॥
 टेक ॥ तुम्हरो अन्त सन्त नहिं जानें ।
 शेष सुरेश महेश गणन १ आदि अन्त
 तुम्हरे कछु नाहीं । रूप धरयो महिभार
 टरन २ जगन्नाथ प्रभु जन हितकारी ।
 करहु कृपा दीजै दर्शन ३ । २ ॥ रागकाफो ॥
 * पूरण ब्रह्म दया सदाना । भज राम श्री
 श्याम दनुजदमना ॥ टेक ॥ जो तीनों
 लोकके मालिक हैं । सो प्रभु बन माहिं
 करें गमना १ जाको दर्शन दुर्लभ देवन
 को । सो गोपियन सङ्गकरें रमना २ जग-
 नाथ कहे प्रभु दरशविना । कैसे होय तोष

* मोको भूलगई बट पनघटकी ॥ चहुँओर फिरुं भटकी
 भटकी ॥ नगमयेदिलकश ॥

सुनु दुःखशमना ३ । ३ ॥ रागपीलू ॥ बसिगो
 सँवला मोरे जिय आज ॥ ध्रुव ॥ शीश
 मुकुट कर सोहे मुरलिया । जो सब देवनको
 सिरताज १ जिन गोवर्द्धन नखपर टेक्यो ।
 इन्द्रको भइहै उर अति लाज २ जन जग्र-
 नाथ शरण में तुम्हारी । हमरो तुम्हीं
 सँवारहु काज ३ । ४ हरिके चरण मन
 लावहु ऐ मन हरिके चरण मन लावहु ॥
 टेक ॥ या संसार के मोह लोभ तजु ।
 थोड़े दिनको है धन १ जब पहुँचैगो काल
 तुम्हारे । कोई नहीं संगीतन २ पड़िहिं
 मार जब यम के करसे । कोउ न जाय
 बचावन ३ जगन्नाथ अब या कलियुगमें ।
 सबसे उत्तम हरिको भजन ४ । ५ ॥

अथ खेमटा ॥

लागि गयोरी सखि मोरा । सांवला पर
 ध्यान ॥ टेक ॥ नहिं मोहिंभावे हाथ कंग-
 नवां । नहिं भावे यमुना स्नान १ नहिं मोहिं
 भावे सोरहो शिंगरवा । तजिगये मधुपुर
 कृपानिधान २ मधुपुर में कुब्जासे लोभा-
 ये । हम कैसे शोभें बिना भगवान ३ जन
 जग्रनाथ कहति श्रीराधा । कब ऐहें हमरे
 धन प्रान ४ । १ यकरोज आवे द-
 गेबजवा । धरि ले जाय हाथ ॥ टेक ॥
 हाथ लिये लोहे की लुहांगी । मारधार
 करि लेजाय साथ १ एक उपाय बचन को
 सीधा । मनसे भजो सुमिरो रघुनाथ २ रैन
 दिवस करो भजन औ सुमिरण । अन्त
 समय जावें यहि साथ ३ यमपुर मोको

देहु छुड़ाई । तुमहीं हो हरि जग्रनाथ के
 नाथ ४ । २ धनि बृन्दावन धनि गोपी ॥
 टेक ॥ एकसमय यमुनाके किनारे । गो-
 पियन गोरस बेचेचली १ दधि बेचत
 हरि पहुँ आइ बोलीं । यमुना पार करिदेहु
 हरी २ नाव चढ़ाइ खवन हरि लागे । डग
 मग डग मग देतकरी ३ डरति २ कोउ
 हरिपहुँ आवे । कोउ गले लपटाति रही ४
 कोउ हँसि कहे सुनहु नट नागर । खवे न
 जानहु नाव अभी ५ धनि २ लीला अनूप
 बिहारी । जन जग्रनाथ न जातिकही ६ । ३ ॥
 × हरिनाम अग्निसे पापतूल जरिजाये ॥
 टेक ॥ कलियुग में नहिँ आन उपाई ।
 नामै से नर तरिजाये १ संगतिसे सजन

× मोरे कांचानिबुवा बुये सो जियासे जायरे ॥

सन्तनकी । जगसुख और न भाये २ छाँड़ि
सकल संशय जगमाहीं जो हरिपद मन
लाये ३ प्रियजाने ताको यदुनंदन । कह
जग्रनाथसहाये ४ । ४ ॥ अथ टप्पा ॥ रागनट ॥ *
देखो मोहन अतिबलवान कालीनाथ लि-
ये ॥ टेक ॥ एक समय हरिगे यमुनातट ।
ग्वालन साथ लिये १ खेलत गेद गिरी
यमुनामें । जलमहँ कूदिगये २ चहुँदिशि
बिकल फिरत ब्रजबासी । ग्वालन त्यागि
दिये ३ हाथ जोरि बिनती करे नागिनि ।
अब कैसे नागजिये ४ जनजग्रनाथ कमल
हरि लाये । डरभौ कंस हिये ५ । १ ॥
दोहा ॥ एकघड़ी आधीघड़ी । आधहुमेंपुनि
आध । तुलसी रघुबर भजनते । कटें कोटि

* मानिले यशोदा के लाल मोहन न मानेरे ॥ आनन्दसागर ॥

अपराध १ यही समुक्ति मैं गायऊं अपनी
 मति अनुसार । जगन्नाथ के नाथ प्रभु
 कीजै ममउद्धार २ जो २ जहँ ते आयके
 भजन सुनेउ मनलाय । सो २ निज २
 धामको विदाहोहु हर्षाय ३ ॥

अथ श्रीयुत मुन्शीनवलकिशोर
 साहब लखनवी की प्रशंसा ॥

दोहा ॥ मुन्शीनवलकिशोर यश अब कहु
 करौं बखान । नाम जासु बिरुयातहै जानत
 जिन्हें जहान ॥

चौपाई ॥

परमउदार दयाकेसागर । बुद्धिराशि सब
 हींगुण आगर ॥ गुणगाहक जगकेहितकारी ।
 विमलकीर्ति जगमें विस्तारी ॥ सब भाषा

के ग्रन्थ अनेका । छापे सुभग एकते एका ॥
जिनको व्ययकारि नर लिखवाये । पढ़त
रहेते सब छपवाये ॥ परम शुद्ध अति सुंदर बर-
णा । सुभग चित्र अति मङ्गल करणा ॥ अल्प
मूल्यमें पढ़ो मँगार्इ । कसकर दीन्हो सुगम
उपाई ॥ याते अधिक कौन भल काजा । भव
वारिधिको रच्यो जहाजा ॥ याते और कौन
भल धर्मा । याते और कौन शुभ कर्मा ॥ सबै
अशीशत देखि भलाई । कहँ लगि उनकी करौं
बड़ाई ॥ मम ग्रन्थन तिन मुद्रित कीन्हे ।
पर उपकार रहत मन दीन्हे ॥ उन यन्त्रा-
लय सम जगमाहीं । पुस्तक शुद्ध छपति कहँ
नाहीं ॥ सब प्रकार की हैं जहँ पुस्तक ।
पढ़े मँगाय जासु जो गाहक ॥

दोहा ॥

उन्निस सौ बत्तीस † में, यह पुस्तक
 मैं कीन्हि । जगन्नाथ प्रभु कृष्णजब,
 मोहिं सुमति यह दीन्हि ॥

इति श्रीभजनावलीमुन्शी जगन्नाथसहायविरचितासमाप्ता ॥

† संवत् विक्रमाजीती ॥

श्रीमद्भागवत भाषाटीकासंयुक्त क्री० ७)

इस ग्रन्थ के उत्तम होने में कदापि सन्देह नहीं है—इसका भाषा तिलक ब्रजबोली में बहुतही प्यारा है आशय प्रत्येक श्लोकों का है क्यों न हो इसके तिलककार महात्मा ब्रजवासी अङ्गदजी शास्त्री हैं—यह तिलक ऐसा सरल है कि इसके द्वारा अल्पसंस्कृतज्ञ पुरुषों का पूरा कार्य निकल सका है—संस्कृत पाठक भी इससे श्लोकोंका पूरा आशय समझ सकें हैं इसबार यह ग्रन्थ टैपके अक्षरों में उम्दा कागज़ सफ़ेद चिकना में छापा गया है और विशेष विद्वान् शास्त्रियों के द्वारा शुद्ध कराया गया है जिससे बम्बई की छपी हुई पुस्तक से किसी काम में न्यून नहीं है उम्दा तसवीर भी प्रत्येक स्कन्ध में युक्त है—आशा है कि इस अमूल्य रत्न के लेने में महाशय लोग विलम्ब न करेंगे मूल्य भी इसका स्वल्प रक्खा गया है और इसके अन्तर्गत जिन दृष्टान्तों की आवश्यकता होती है उनके लिये दृष्टान्तप्रदीपिनी नाम की पुस्तक ४ भागों में अलाहिदा छपी हुई तैयार है ॥